

S.S.

Section-A

1 → C	40 - A	68 - C
2 → C	41 - B	72 - D
3 → D	43 - D	73 - A
4 → C	44 - A	75 - C
5 → D	45 - D	76 - D
6 → B	46 - C	77 - D
8 → C	47 - B	80 - A
9 → A	50 - C	
10 → B	53 - A	
11 - D	54 - B	
23 - C	57 - C	
27 - A	61 - A	
30 - A	62 - A	
31 - C	64 - B	
36 - A	65 - C	
38 - A	66 - D	
37 - B		

प्रश्न 2. इटली के एकीकरण में मेजिनी और काबूर के योगदान का वर्णन करें।

उत्तर-इटली के एकीकरण में मेजिनी और काबूर के निम्नलिखित योगदान थे-

**मेजिनी**-मेजिनी साहित्यकार, गणतांत्रिक विचारों का समर्थक और योग्य सेनापति था। मेजिनी संपूर्ण इटली का एकीकरण कर उसे एक गणराज्य बनाना चाहता था। जबकि सार्डिनिया-पिडमोंट का शासक चार्ल्स एलबर्ट अपने नेतृत्व में सभी प्रांतों का विलय चाहता था। उधर पोप भी इटली को धर्मराज्य बनाने का पक्षधर था। इस तरह विचारों के टकराव के कारण इटली के एकीकरण का मार्ग अवरुद्ध हो गया था। कालांतर में ऑस्ट्रिया के हस्तक्षेप से इटली में जनवादी आंदोलन को कुचल दिया गया। इस प्रकार मेजिनी की पुनः हार हुई और वह पलायन कर गया।

1848 ई० तक इटली के एकीकरण के लिए किए गए प्रयास वस्तुतः असफल रहे, किन्तु धीरे-धीरे इटली में इन आंदोलनों के कारण जनजागरूकता बढ़ रही थी और राष्ट्रीयता की भावना बढ़ रही थी। इटली में सार्डिनिया-पिडमोंट का नया शासक विक्टर इमैनुएल राष्ट्रवादी विचारधारा का था और उसके प्रयास से इटली के एकीकरण का कार्य जारी रहा। अपनी नीति के क्रियान्वयन के लिए विक्टर ने काउंट काबूर को प्रधानमंत्री नियुक्त किया।

**काउंट काबूर**-काउंट काबूर एक सफल कूटनीतिज्ञ एवं राष्ट्रवादी था। वह इटली के एकीकरण में सबसे बड़ी बाधा ऑस्ट्रिया को मानता था। अतः उसने ऑस्ट्रिया को पराजित करने के लिए फ्रांस की ओर से युद्ध करने की घोषणा कर फ्रांस का राजनीतिक समर्थन हासिल किया। काबूर ने नेपोलियन III से भी एक संधि की, जिसके तहत फ्रांस ने ऑस्ट्रिया के खिलाफ पिडमोंट को सैन्य समर्थन देने का वादा किया। बदले में नीस और सेवाय नामक दो रियासतें काबूर ने फ्रांस को देना स्वीकार किया।

1860-61 में काबूर ने सिर्फ राम को छोड़कर उत्तर तथा मध्य इटली के सभी रियासतों को मिला लिया तथा जनमत-संग्रह कर इसे पुष्ट भी कर लिया। 1862 ई० तक दक्षिण इटली रोम तथा वेनेशिया को छोड़कर बाकी रियासतों का विलय रोम में हो गया और सभी ने विक्टर इमैनुएल को शासक माना।



प्रश्न 5. राजनीतिक दलों के प्रमुख कार्य बताएँ ।

14

[13 (A), 14 (C), 16 (A) I, 19 (A) II]

उत्तर—राजनीतिक दलों के प्रमुख कार्य निम्नलिखित हैं :

(i) नीतियाँ एवं कार्यक्रम तय करना—राजनीतिक दल अपनी बनाई गई नीतियों और कार्यक्रमों के आधार पर चुनाव लड़ते हैं। वे भाषण, टेलीविजन, रेडियो, समाचारपत्र आदि के माध्यम से अपनी नीतियाँ एवं कार्यक्रम जनता के सामने रखते हैं तथा मतदाताओं को आकर्षित करने की कोशिश करते हैं।

(ii) शासन का संचालन—जिस राजनीतिक दल को चुनाव में बहुमत प्राप्त नहीं होता, वे विपक्ष में बैठते हैं तथा उन्हें विपक्षी दल कहते हैं। एक ओर जहाँ सत्ता पक्ष शासन का संचालन करता है, वहीं विपक्षी दल सरकार पर नियंत्रण रखता है, और सरकार को गड़बड़ियाँ करने से रोकता है।

(iii) चुनावों का संचालन—सभी राजनीतिक दल अपनी विचारधाराओं और सिद्धान्तों के अनुसार कार्यक्रम एवं नीतियाँ तय करते हैं, जिसे चुनाव घोषणा-पत्र कहते हैं। राजनीतिक दल अपने उम्मीदवारों को खड़ा करने और चुनाव जीतने का हर संभव प्रयत्न करते हैं।

(iv) लोकमत का निर्माण—लोकतंत्र में सत्ता प्राप्त करने के लिए शासन की नीतियों पर लोकमत प्राप्त करना होता है, और यह कार्य राजनीतिक दलों के द्वारा होता है।

(v) सरकार एवं जनता के बीच माध्यम का कार्य—राजनीतिक दल ही जनता की समस्याओं और आवश्यकताओं को सरकार के सामने रखते हैं और सरकार की कल्याणकारी योजनाओं को जनता तक पहुँचते हैं।

(vi) राजनीतिक प्रशिक्षण—राजनीतिक दल चुनावों के समय अपने समर्थकों को राजनैतिक कार्यों जैसे—मतदान करना, चुनाव लड़ना, सरकार की नीतियों की आलोचना या समर्थन करना आदि का प्रशिक्षण देते हैं।

(vii) दलीय कार्य—प्रत्येक राजनीतिक दल कुछ दलीय कार्य भी करते हैं। जैसे—अधिक-से-अधिक मतदाताओं को अपने दल का सदस्य बनाना, अपनी नीतियों और कार्यक्रमों का प्रचार-प्रसार करना तथा दल के लिए चंदा इकट्ठा करना आदि।

(viii) गैरराजनीतिक कार्य—बाढ़, सुखाड़, भूकम्प आदि के दौरान राजनीतिक दल राहत संबंधी कार्य करते हैं।

प्रश्न 2. राष्ट्रीय आय की परिभाषा दें। इसकी गणना की प्रमुख विधि कौन-कौन सी हैं ?

19

[16 (A) II]

उत्तर—वर्ष भर में किसी देश में अर्जित आय की कुल मात्रा राष्ट्रीय आय कहलाती है, अर्थात् किसी देश का एक वर्ष में उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं का कुल मूल्य। राष्ट्रीय आय = उपभोग व्यय + विनियोग। आर्थिक प्रगति को मापने का सर्वोत्तम तरीका राष्ट्रीय आय है। देश का आर्थिक विकास राष्ट्रीय आय पर निर्भर करता है। श्रम एवं पूँजी के मिलन से प्राकृतिक संसाधन उपलब्ध होने के उपरान्त जो भौतिक उत्पादन जिसे

हम मूल्य से आंक सकते हैं तथा अभौतिक उत्पाद (ऐसी सेवाएँ जो अप्रत्यक्ष रूप से संसाधनों में वृद्धि करती हैं) के कुल मूल्य के योग को ही राष्ट्रीय आय कहा जाता है।

**राष्ट्रीय आय की गणना**—जब राष्ट्र की आय राष्ट्र से हुए कुल उत्पादन के माध्यम से की जाती है तब यह 'उत्पादन गणन विधि' है। अन्य विधि 'आय गणन विधि' के अन्तर्गत राष्ट्रीय आय की गणना राष्ट्र के व्यक्तियों की कुल आय के आधार पर की जाती है। जब राष्ट्रीय आय की गणना व्यक्तियों के द्वारा की गई व्यय के आधार पर की जाती है तो यह 'व्यय गणन विधि' कहलाती है। जब राष्ट्रीय आय की गणना विभिन्न परिस्थितियों में व्यक्तियों के प्रयास से उत्पादित वस्तुओं के विभिन्न मूल्यों के आधार पर की जाती है तो वह 'मूल्य योग विधि' कहलाती है। व्यावसायिक गणना विधि के अन्तर्गत राष्ट्रीय आय की गणना व्यावसायिक संरचना के आधार पर की जाती है।

**एक 3. प्रति व्यक्ति आय तथा राष्ट्रीय आय में अंतर स्पष्ट करें।**



प्रश्न 24. खनिज कितने प्रकार के होते हैं ? प्रत्येक का सोदाहरण परिचय दें। 27

उत्तर—खनिज सामान्यतः दो प्रकार के होते हैं। वे हैं—(क) धात्विक खनिज तथा (ख) अधात्विक खनिज।

इनका विशेष परिचय निम्नलिखित हैं—

(क) धात्विक खनिज—यह दो प्रकार के होते हैं—

(i) लौहयुक्त खनिज तथा (ii) अलौहयुक्त खनिज।

लौहयुक्त खनिज—जिस धात्विक खनिजों में लोहे की मात्रा अधिक होती है, उन्हें लौह युक्त खनिज कहते हैं। जैसे—लौह अयस्क, मैंगनीज, निकेल, टंगस्टन आदि।

(ख) अधात्विक खनिज—अधात्विक खनिज भी दो प्रकार के होते हैं। वे हैं—

(i) कार्बनिक खनिज तथा (ii) अकार्बनिक खनिज।

(i) कार्बनिक खनिज—कार्बनिक खनिज में कार्बन की मात्रा पाई जाती है। ये लाखों-लाख वर्ष से पृथ्वी के नीचे दबे जीवाश्म होते हैं। इन जीवाश्मों में कार्बन की भी मात्रा होती है। जैसे—कोयला, पेट्रोलियम तेल और गैस।

(ii) अकार्बनिक खनिज—अकार्बनिक खनिजों में कार्बन की मात्रा नहीं पाई जाती और पाई भी जाती है तो बहुत कम। जैसे—अभ्रक, सोना, चाँदी, ताँबा आदि।

प्रश्न 25. मैंगनीज अथवा बॉक्साइट की उपयोगिता तथा देश में

प्रश्न 10. जीवनरक्षक आकस्मिक प्रबंधन से आप क्या समझते हैं ? [18 (C)]

32

उत्तर—जीवनरक्षक आकस्मिक प्रबंधन से तात्पर्य है कि आपदा की घड़ी में जीवन रक्षा का उपाय किया जाए । आकस्मिक प्रबंधन किसी प्रशासन की सफलता की कसौटी है । इसके अंतर्गत आपदा के आते ही प्रभावित लोगों को आपदा से निजात दिलाना प्रथम और प्रमुख उद्देश्य होता है । बाढ़ की स्थिति में आकस्मिक प्रबंधन का तरीका अलग है जबकि भूकंप एवं सुनामी की स्थिति में आकस्मिक प्रबंधन का तरीका अलग है ।

(i) बाढ़ की स्थिति में आकस्मिक प्रबंधन—बाढ़ आने पर पहली प्राथमिकता लोगों और मवेशियों को बचाना होना चाहिए । लोगों को नाव पर बैठकार या तैराकों की मदद से बहते लोगों को किनारे पर पहुँचाना होता है । पुनः उन्हें सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाना होता है । उसके बाद घर में बच रही है सम्पति के साथ मवेशियों को निकालने को प्राथमिकता देनी

चाहिए। सुरक्षित स्थान गाँव के बाहर रेलवे लाइन, सड़क या तटबंध हो सकते हैं। लोगों और मवेशियों को सुरक्षित स्थानों पर पहुँच कर उनके भोज की व्यवस्था करना चाहिए। मवेशियों के लिए चारे की व्यवस्था की जाए। बाढ़ के कारण विषैले जन्तु भी ऊँचे स्थानों की खोज में बिलबिलाते रहते हैं। उनके भी बचाव का प्रबंध होना चाहिए। बाढ़ का पानी उतर जाने के बाद कुँओं के जल को शुद्ध करना तथा यत्र-तत्र ब्लिचिंग पाउडर का छिड़काव होना चाहिए। इतना हो जाए तो उसे सफल प्रबंधन मानना चाहिए।

(ii) **भूकंप की स्थिति में आकस्मिक प्रबंधन**—भूकंप के बाद तीन कामों पर ध्यान दिया जाता है। वे हैं—बचे हुए लोगों को राहत कैंप में ले जाना और उनकी प्रारंभिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना, मलवे में दबे लोगों को निकलना तथा मृत लोगों और पशुओं को जमीन में दबा देना या जला देना। महामारी फैलने की आशंका पर उसे रोकने का प्रबंध करना।

(iii) **सुनामी की स्थिति में आकस्मिक प्रबंधन**—सुनामी की स्थिति में बह रहे लोगों को बचाना और उन्हें राहत शिविरों में पहुँचाना पहला काम होना चाहिए। जो लोग मृत्यु को प्राप्त हो गए उन्हें उचित क्रिया द्वारा